पुस्तक समीक्षा

सार्थक भूमिका की तलाश

पुस्तक — बच्चे मशीन नहीं हैं (2022)
लेखक — आलोक कुमार मिश्रा
प्रकाशक — अगोरा प्रकाशन, वाराणसी

विजया सती*

शिक्षा जगत से कई बरसों से जुड़े आलोक कुमार मिश्रा (लेखक) संवेदनशील मिलनसार शिक्षक और कवि हैं। वे एक अध्यापक होने के साथ-साथ विद्यार्थी भी हैं। क्योंकि वे विद्यार्थी होने के कारण बच्चों से प्रतिदिन सीखते हैं। भारत में स्कूली शिक्षा की एक विशाल दुनिया है। लेखक उसका कोई न कोई सिरा पकड़ने की कोशिश में इस पुस्तक में अपने वैविध्यपूर्ण चिंतन व अनुभव को वैचारिक, शोधपरक, संस्मरणात्मक और दैनंदिन के रूप में समाहित करता है। इनके माध्यम से वे एक शिक्षक की दृष्टि में विद्यार्थी और शिक्षा पर अपने विचार केंद्रित करने का प्रयास करते हैं।

यह पुस्तक अध्यापन, कक्षा और बच्चों को लेकर भावपूर्ण किंतु तार्किक दृष्टिकोण से बहुत कुछ रेखांकित करती है। 'टूटे पूर्वाग्रहों का घेरा' शीर्षक में पहला ही स्वर विरोध का है। बच्चे आँख मूँदकर कुछ भी मानें, इसके स्थान पर लेखक उनकी आँख खोलने का दायित्व शिक्षा को देना उचित समझते हैं। इस पुस्तक का शीर्षक लेखक की व्यापक दृष्टि को दर्शाता है कि बच्चे निस्पंद, निर्जीव या यांत्रिक नहीं, वे सजीव, स्पंदित और सचेतन हैं। लेखक के मन में बच्चे के व्यक्तित्व को मान देने की चाह बलवती है। वे चाहते हैं कि बच्चे केवल सुनते न रहें, उन्हें भी सुना जाना चाहिए। लेखक उन्हें किताबों के बोझ से लादने के पक्ष में नहीं हैं, ज्ञान को भय का हथौड़ा नहीं बनने देना चाहते। इसलिए वे रेखांकित करते हैं कि हर विषय पर बच्चों की अपनी समझ होती है, उनके दृष्टिकोण का निर्माण होता है। यदि हम उन्हें बातचीत में शामिल करें, उन्हें ठीक से सुनें तो भविष्य की आहटों को सुना जा सकता है। लेखक की यह दृढ़ मान्यता है कि हम अपनी भूमिका निभाने से न चूकें।

सहज दायित्वपूर्ण अध्यापक होने के क्रम में लेखक ने जाना कि बच्चों की दुनिया में ललक,

* *पूर्व असोसिएट प्रोफेसर*, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110007

जिज्ञासा, श्रम और अभिव्यक्ति की बैचैनी है, किंतु दूसरी ओर अध्यापकों की दुनिया प्राय: संवेदनहीनता के कगार पर खड़ी दिखाई देती है। इन दोनों के संधिस्थल पर खड़े आलोक (लेखक) अपनी भूमिका के प्रति जवाबदेह होने का माद्दा रखते हैं। बच्चे की जिज्ञासा और शिक्षक की प्रेरणा का सम्मिलन समाज में कितनी सकारात्मक भूमिका निभा सकता है, इनका सहज विश्वासी लेखक मन मानता है कि ज़िंदगी किताब नहीं है, बल्कि किताब ज़िंदगी को समझने में मददगार हो सकती है।

सही अर्थ में शिक्षक होने का अर्थ बताती यह पुस्तक विविधता रेखांकित करती है कि बच्चों की सृजनात्मकता को आकाश कैसे मिले? बच्चों के साथ मिले समय में मिलजुल कर क्या नहीं किया जा सकता? लेखक का बच्चों की क्षमताओं पर दृढ़ विश्वास है। अभिव्यक्तियों में आने वाले अनेक सकारात्मक शब्द इस ओर इंगित करते हैं— विश्वास, आदान-प्रदान, जिज्ञासा, रुचि, क्षमता, सहयोग, अनुशासन, सामंजस्य, लेखन आदि। शिक्षक की यह दृष्टि वरेण्य और श्रेष्ठ है कि वह सिखाते हुए सीखना भी चाहता है। वह बोझ और भय जैसी नकारात्मकता का बहिष्कार करता है।

यह पुस्तक 32 शीर्षकों में अपनी बात प्रस्तुत करती है, लेखक विविध शैक्षिक मुद्दों पर संवाद करते हैं— हमसे, आपसे, सबसे। ये शीर्षक लेखकीय दृष्टि को बहुत हद तक व्यक्त करने वाले होते हैं, जैसे— टूटे पूर्वाग्रहों का घेरा, कक्षा में क्या करें शिक्षक, बच्चे कैसे पढ़ें धर्मनिरपेक्षता का पाठ आदि। इस पुस्तक का लक्ष्य सार्वजनिक शिक्षा की सशक्तता और विद्यार्थी का हित है। यह शिक्षा जगत के दोहरेपन के खिलाफ़ है। यह शिक्षा को उत्सव में बदलने की कामना करता है। लेखक सरकारी स्कूलों की वापसी के प्रति इतना आश्वस्त है कि समाज की वास्तविकता और विविधता में रहकर सीखने की भावना से प्रेरित होकर वे अपनी बेटी का दाखिला एक सरकारी स्कूल में कराने का निर्णय लेते हैं।

स्कूली शिक्षा के कई नवाचारी कार्यक्रमों की जानकारी पुस्तक के माध्यम से सामान्य जन को प्राप्त होती है, जैसे— मिशन बुनियाद, मेंटर शिक्षक कार्यक्रम, चुनौती कार्यक्रम आदि। पितृसत्ता और लिंगभेद पर विचार भी यहाँ स्थान पाते हैं। 2018 से 2021 तक का चिंतन, मंथन, संवाद जो यहाँ संकलित हुआ है उसमें लेखक ने अपने सर्वश्रेष्ठ अनुभव भी साझा किए हैं यथा केरल का सशक्त शिक्षा मॉडल। कई सवालों के घेरे में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* पर विशद वैचारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

लेखक मूल्यों के प्रति सजग शिक्षक के रूप में अपनी पहचान व्यक्त करते हैं। वे अनवरत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समय और साथ देने का आग्रह करते हैं। वे शिक्षा में समता, बंधुत्व और भाईचारे को महत्व देते हैं। कोरोना काल (2019) की कठिनाइयों का आकलन करते हुए वे एक सकारात्मक नोट पर विराम लेते हैं, अधिक सक्षम और विश्वास से परिपूर्ण बच्चे कोरोना काल को अपने जीवन के अच्छे और उत्पादक दिनों के रूप में याद कर पाएँगे!

विगलित मन से जो लेखक 'डॉटर्स डे' पर बेटियों के नाम में पत्र लिखते हैं, वही शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों के नाम भी अपना संबोधन दर्ज

करते हैं। समग्र कृति में 'जिज्ञासा' शब्द विमर्श की कुँजी बनकर आता है। यही वह मूलभूत बिंदु है, जहाँ से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, अर्थपूर्ण शिक्षण, मानवीय संवेदना का प्रसार जैसी राहें प्रस्फुटित होती हैं।

लेखकीय अनुभव के दायरे में अनेक रोचक गतिविधियाँ आती हैं। जैसे प्रकृति शिक्षिका है, वह गलती होने पर भूल सुधार का अवसर देती है, उससे सीखने के क्रम में सहज मानवीय भावों का विकास होता है। प्रकृति भोले बाल वृंद को परस्पर सम्मान, आदर, समानता का व्यवहार और पूर्वाग्रहों से बचना सिखाती है। यह पुस्तक स्पष्ट करती है कि कोई भी कार्य, स्वयं करते हुए सीखने का कोई विकल्प नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या हम यह विकल्प बच्चों को दे रहे हैं? लेखक जानते हैं कि स्कूल से बाहर की दुनिया में भी सीखना अबाधित चलता रहता है।

इस पुस्तिक में आरंभ से अंत तक एक वैचारिक उन्मेष दिखाई देता है। इस आदर्श दृष्टि का प्रसार भी है कि जो अच्छा नहीं होगा उसे हम मिलकर अच्छा कर लेंगे। सुविधा से वंचित की पीड़ा को समझने का आदर्श भी लेखक के मन में है, जो यहाँ आकार लेता है। महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर लेखक का उमड़ता-छलकता मन पग-पग पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। अपनी भूल सुधार को तत्पर लेखक (शिक्षक) बाल मन की थाह लेकर, उसके आत्मसम्मान को बनाए रखने में सहज ही मददगार हो उठता है।

अध्यापन, पाठ्यक्रम, विषय विशेष, विद्यार्थी, समय और समाज से संबद्ध अपने अनुभवों को शब्दबद्ध करने के क्रम में, कभी-कभी लेखक भाषा की सहज सरलता को खो भी देते हैं, इसलिए कुछ अंशों में क्लिष्टता उभर आती है, जैसे— दस्तावेज़ी अपेक्षाओं और रचनात्मक व निर्माणात्मक दृष्टिकोण के अनुरूप, कुछ नवीन शिक्षण उपागमों को अपनाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार की क्लिष्टता ने कहीं-कहीं वाक्य रचना को जटिल बना दिया है। किंतु कुल मिलाकर इस पुस्तक में भाषिक संरचना में प्रवाह और प्रभाव-क्षमता है, वहीं लेखक के कवि मन की कौंध है। शिक्षा, शिक्षण, विद्यार्थी, शिक्षक सभी के प्रति सामयिक एवं प्रगतिशील दृष्टि को समावेशित करते हुए यह पुस्तक, शिक्षा जगत के महत्वपूर्ण पहलुओं पर एक सार्थक दस्तक है।